VRINDAVAN Books International

BASED ON
NEP/NCF

संस्कृत निकुंज

Teacher's Manual

तृतीया

Vrindavan Books International
New Delhi

दूसरा पाठ : तृतीया

मूर्ख की (से) मित्रता

संकेत : वृक्षात् नातिदूरे ------------------------- भवेयम्।''

अर्थ–पेड़ के पास एक तालाब था। उस तालाब में एक मेढक था। उसकी मित्रता गिलहरी के साथ थी।

एक दिन मेढक ने गिलहरी से कहा–''मित्र! मेरी अभिलाषा है कि मैं विवाह के बंधन में बँध जाऊँ।

संकेत : चमरपुच्छः अवदत् -------------------- कारयिष्यामि।

अर्थ–गिलहरी ने कहा–''यह तो खुशी का विषय है। विवाह में मैं बाजों के साथ नाचूँगी। यहाँ (इधर) बाजे बजेंगे वहाँ (उधर) ताल ध्वनि के साथ मैं नाचूँगी। आओ, मेरे साथ। (मैं) तुम्हारा विवाह राजकुमारी के साथ कराऊँगी।''

संकेत : तौ चलतः ------------------------- प्रासादं पश्य।''

अर्थ–वे दोनों लक्ष्य के प्रति चलते हैं। बहुत समय तक चलने से मेढक थक गया। वह बोला– ''मित्र! राजमहल कहाँ है? और वह राजकुमारी किधर है?'' गिलहरी ने कहा–''अरे मेढक! तुम्हारा लक्ष्य दूर नहीं है। हम दोनों टीले के पीछे जा रहे हैं। यदि इस स्थान को जानने की इच्छा करते हो तो इस पेड़ पर चढ़कर महल देख लो।''

संकेत : दर्दुरः अवदत् ------------------------- अदर्शयत् च।

अर्थ–मेढक ने कहा–''किंतु मैं चढ़ने में असमर्थ हूँ। और इधर यह ताड़ का पेड़ है।'' गिलहरी ने समुचित उपाय किया। उसने उसे पीठ पर बैठाकर शीघ्र ही पेड़ के ऊपर ताड़ के पत्ते पर स्थापित किया/बैठा दिया। वहाँ से स्थित होकर महल देखना संभव हुआ। मेढक गहरी निगाह से उसे बहुत समय तक देखता रहा और मन में राजकुमारी के सपने देखता रहा।

संकेत : चमरपुच्छः तां --------------------- हृदयेन अवदत्।

अर्थ–गिलहरी उसे वहीं छोड़कर जमीन पर उतर गई। जब मेढक को अपना ख्याल आया, तब उसे पश्चाताप हुआ। वह दुखी हृदय से बोला–

संकेत : ''तालवृक्षेषु ---------------------- मम जीवनम्।''

अर्थ– ''मूर्ख संग की मित्रता ताड़ पेड़ पर चढ़े रह गए।
ये ताड़ ही जीवन मेरा ब्याह के सपने अधूरे रह गए।।''

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	बहुवचन
दर्दुरात्	दर्दुरेभ्यः
दर्दुरस्य	दर्दुराणाम्
दर्दुरे	दर्दुरेषु
हे दर्दुर!	हे दर्दुराः!

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चमरपुच्छात्	चमरपुच्छाभ्याम्	
चमरपुच्छस्य	चमरपुच्छयोः	
चमरपुच्छे	चमरपुच्छयोः	
हे चमरपुच्छ!	हे चमरपुच्छौ!	

2. (क) दर्दुरः। (ख) स्वविवाहबंधनस्य।
   (ग) राजप्रासादे। (घ) तालवृक्षः।

3. (क) दर्दुरस्य मैत्री चमरपुच्छेन सह आसीत्।
   (ख) चमरपुच्छः अवदत्–"अयं तु हर्षविषयः। विवाहे अहं वाद्ययंत्रैः सह नर्तिष्यामि। अत्र वाद्ययंत्राः वदिष्यन्ति तत्र तालध्वनैः सह अहं नर्तिष्यामि। आगच्छ, मया सह। तव विवाहं राजकौमार्यया सह कारयिष्यामि।"
   (ग) दर्दुरः अवदत्–"अहम् आरूढने असमर्थोऽस्मि।"
   (घ) चमरपुच्छः दर्दुरं त्यक्त्वा भूमौ अगच्छत्।

4. (क) चमरपुच्छ मित्र-विवाहे **कैः** सह नर्तिष्यतिश
   (ख) आवां **कस्मात्** पृष्ठभागं गच्छावः?
   (ग) **केन** दर्दुरः श्रान्तः अभवत्?
   (घ) चमरपुच्छः तत्रैव त्यक्त्वा कुत्र **अवतरत्**?

5. (क) अहं विवाहसमये नृत्यामि।
   (ख) अहं तव विवाहं राजकौमार्यया सह कारयामि।
   (ग) अहं तालवृक्षात् अवतरामि।
   (घ) अहं समुचितोपायं करोमि।
   (ङ) अहं लक्ष्यं प्रति गच्छामि।

6. (क) विवाहबन्धने (ख) अस्मिन् वृक्षे
(ग) राजप्रासादं (घ) मनस्वैव, स्वप्नम्
(ङ) आत्मसंज्ञानम् ; पश्चातापम्

7. (क) क्त्वा (ख) क्त्वा
(ग) तरित्वा (घ) दग्ध्वा
(ङ) दा

तीसरा पाठ :
विद्या

संकेत : इह जगति -------------------- सर्वकार्यसाधिका अस्ति।

अर्थ–इस संसार में विद्या ही सर्वप्रधान धन है। विद्या माता के समान रक्षा करती है, पिता के समान हितकर कार्यों के लिए नियुक्त करती है, पत्नी के समान गलत कार्यों से दूर करती है। अधिक क्या कहें ? विद्या कल्पलता के समान समस्त कार्यों को साधने (पूर्ण करने वाली) है।

संकेत : मनुष्याणां ---------------------------- प्रबोधः भवति।

अर्थ–मनुष्यों के हृदय के अन्तःकरण में बहुत–सी विधाएँ और अनेक विषयों की शक्तियाँ हैं। वे स्वयं प्रकाशित नहीं होतीं। तेज का अवरोध करने वाले अंधकार को शिक्षा के द्वारा दूर किया जाता है। उस प्रकाश (ज्ञान) से पुरुषों में प्रतिष्ठा आती है। और उनसे ही प्रकाश के द्वारा मनुष्यों की शीलता शुद्ध होती है, स्वभाव विवेकशील होता है। चरित्र में सुंदरता चमकती है, वार्तालाप में परिपक्वता का बोध होता है।

संकेतः विद्या एव सर्वधनानां ---------------------- तृप्तिर्भवति।

अर्थ–विद्या ही सभी धनों का मूल है, अनेक संशयों को दूर करने वाली है, यह परोक्षार्थ का दर्शन कराने वाली है। विद्या मनुष्य को उन्नति के रास्ते पर अग्रसर करती है, बुद्धि को प्रखर करती है। कर्त्तव्यपरायणता का ज्ञान कराती है। इसलिए इस संसार में विद्या ही सर्वश्रेष्ठ धन है। सुख का परम कारण विद्या ही है। विद्या से संपूर्ण जीवन की तृप्ति होती है।

संकेत : विद्या विनयं ---------------------------- तदुक्तम्।

अर्थ–विद्या विनम्रता देती है, विनम्रता से पात्रता आती है, पात्रता से धन आता

है, धन से धर्म, तब सुख होता है। अधिक विस्तार से क्यों जाएँ। विद्या सभी धनों में प्रधान है। जैसा कहा गया है–

संकेत : न चौरहार्यं ------------------------------- अपि च–

अर्थ–(इस विद्या को) चोर चुरा नहीं सकता। राजा हरण नहीं कर सकता। भाई बाँट नहीं सकता और न वजन वाला है यह व्यय करने पर नित्य बढ़ता है। विद्या धन सभी धनों में प्रधान है।

और भी–

संकेत : मातेव रक्षति ---------------------- कल्पलतेव विद्या।

अर्थ–माता के समान रक्षा करती है, पिता के समान हित में लगाती है, पत्नी के समान न करने योग्य कार्यों पर खेद करती है। धन की प्राप्ति कराती है, चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है। यह कल्पलता के समान विद्या क्या-क्या नहीं करती? (अर्थात् सब कुछ करती है।)

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	कान्ते	कान्ताः
कान्तया		कान्ताभिः
	कान्ताभ्याम्	कान्ताभ्यः

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
शिक्षा		शिक्षाः
शिक्षाम्		शिक्षाः
शिक्षया		शिक्षाभिः
शिक्षायै		शिक्षाभ्यः

2. (क) हिते नियुङ्क्ते। (ख) विद्या।
   (ग) सुखस्य। (घ) धनम्।
   (ङ) अभिरमयत्यपनीय खेदम्।
3. (क) मनुष्याणां हृदये अंधतमसावृते बहुविधाः नानाविषयाश्च शक्त्यः तिष्ठन्ति।
   (ख) प्रकाशेन मनुष्याणां शीलं शुद्धयति।

(ग) धनात् धर्मः ततः सुखं भवति।

(घ) विद्या व्ययकृते वर्धते नित्यं अतः सर्वधनं प्रधानमस्ति।

(ङ) विद्या मातेव रक्षति, पितेव नियुंक्ते, कान्ते अभिरमपनीय खेदं करोति। सा लक्ष्मीं तनोति तथा च दिक्षुः कीर्तिं वितनोति।

4. अंधतमसावृते ; शक्त्यः ; प्रकाशन्ते; तमसि ; प्रतिष्ठाम्।

5. (क) विद्या माता इव रक्षति।

(ख) इह जगति विद्यैव सर्वश्रेष्ठं धनम् अस्ति।

(ग) विद्या विनयं ददाति।

(घ) विनयात् पात्रतां याति।

(ङ) धनात् धर्मं ततः सुखम्।

6. (क) (i) विद्या चरित्रं चारुताम् अञ्चेत्।

(ii) विद्या परोक्षार्थदर्शिका भवेत्।

(iii) पात्रत्वात् धनं आगच्छेत्।

(iv) विद्यालक्ष्मीं तनोत्।

(ख) (i) मनुष्याणाम् (ii) सर्वधनान्

(iii) विनयेभ्यः (iv) धर्मान्

7.

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क)		ददतः	ददन्ति
(ख)		शुद्धयतः	शुद्धयन्ति
(ग)		अंचतः	अंचन्ति
(घ)		रक्षतः	रक्षन्ति
(ङ)		यातः	यान्ति

चौथा पाठ :
गुरुजी की दक्षिणा

संकेत : द्वापरे महाभारतकाले ------------------ पारंगतः आसीत्।

अर्थ–द्वापरयुग (में) के महाभारत काल में द्रोण नाम के धनुर्वेद के आचार्य हुए हैं। वे केवल धनुर्विद्या में नहीं, अपितु समस्त शस्त्र–अस्त्र संचालन में निपुण और पारंगत थे।

संकेत : द्रोणाचार्यः निर्जने वने -------------- सर्वश्रेष्ठः अभवत्।

अर्थ–द्रोणाचार्य ने निर्जन वन में शिष्यों को शिक्षा दी। वहाँ पाण्डुपुत्र 'पाण्डवों' और धृतराष्ट्र पुत्र 'कौरवों' ने शिक्षा प्राप्त की। उन राजपुत्रों में धनुर्विद्या में अर्जुन सर्वश्रेष्ठ हुए।

संकेत : एकदा एकलव्यः ------------------ स्वीकरोतु'' इति।

अर्थ–एक दिन एकलव्य नामक कोई भीलराज का पुत्र द्रोणाचार्य के पास जाकर विनम्रता के साथ बोला–''हे गुरुदेव! आपके पास में मैं अस्त्रविद्या सीखने के लिए आया हूँ। मुझे (आप) अपना शिष्य स्वीकार करें।''

संकेत : द्रोणाचार्यः उत्तरम् -------------------- निपुणः अभवत्।

अर्थ–द्रोणाचार्य ने उत्तर दिया–'तुम भील के पुत्र हो। तुम भील हो। अतः तुम्हें अस्त्र विद्या नहीं दूँगा।'' एकलव्य निराश हुआ परंतु जंगल में जाकर गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति (उसने) बनाई। मूर्ति में गुरुरूप मानकर उसके सामने निरंतर अभ्यास करने लगा। सतत् अभ्यास से थोड़े समय में ही वह अस्त्र विद्या में निपुण हो गया।

संकेत : एकस्मिन् अवसरे -------------------- मुखान् अविंध्यत्।

अर्थ–एक समय द्रोण राजपुत्रों के साथ शिकार के लिए वहाँ आए। उनके कुत्ते उनसे आगे थे। वे कुत्ते काले वर्णवाले एकलव्य को देखकर भौंकने लगे। यह देखकर एकलव्य ने कुत्तों के मुखों को बींध दिया।

संकेत–विंधमुखान् दृष्टवा् --------------------- तथा करोमि।

अर्थ–बींधे हुए मुखों को देखकर राजपुत्रों के साथ–साथ द्रोणाचार्य भी चकित हुए। द्रोण ने पूछा–''रे धनुर्धारी! तुम कौन हो? और तुम्हारे आचार्य कौन हैं?'' एकलव्य ने उत्तर दिया–''निषादराज का पुत्र मैं एकलव्य नाम वाला आपका शिष्य हूँ। आपके चरणों में नमस्कार करता हूँ।'' यह बात सुनकर द्रोण पुत्र विस्मित हुए। वह बोले–''किंतु मेरे द्वारा तुम्हारी प्रार्थना अस्वीकार की गई तब मैं तुम्हारा आचार्य कैसे हुआ?'' एकलव्य ने उनको बनाई प्रतिमा के समीप ले जाकर कहा–''आचार्य! आपके सामने (किए) सतत् अभ्यास से मैं धनुर्विद्या में निपुण हुआ हूँ। तब द्रोणाचार्य ने सोचा–''यदि एकलव्य धनुर्विद्या में सर्वश्रेष्ठ हो गया तो राजपुरुष अर्जुन के लिए दिया गया आशीर्वाद व्यर्थ हो जाएगा। अतः ऐसा करता हूँ।''

संकेत : द्रोणः एकलव्यं -------------------------- समर्पयत्।

अर्थ–द्रोण एकलव्य से बोले–''पुत्र! यदि तुम मेरे शिष्य हो तो मुझे गुरुदक्षिणा दो।'' एकलव्य ने झुककर कहा–''आप आज्ञा दीजिए गुरुदेव!'' द्रोण बोले–''मुझे

दक्षिणा के रूप में अपने दाहिने हाथ का अँगूठा दो।'' एकलव्य ने बिना विलम्ब किए अपना अँगूठा काटकर गुरु के चरणों में समर्पित कर दिया।''

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	एकलव्यौ	
एकलव्यम्		
एकलव्येन		एकलव्यैः
	एकलव्याभ्याम्	

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अर्जुनः		
	अर्जुनौ	
अर्जुनेन		
	अर्जुनाभ्याम्	अर्जुनेभ्यः

2. (क) सकाशात् ; माम् ; स्वीकरोतु ; उत्तरम् ; पुत्रः

   (ख) निराशः ; प्रतिमाम् ; मूर्ते ; निधाय ; निरंतरम् ; कालेन

3. (क) (i) शिष्यः (ii) अश्रेष्ठः
   (iii) आशा (iv) शस्त्रविद्या
   (v) सरमा

   (ख) (i) गत्वा (ii) निधाय
   (iii) नि (iv) क्त्वा
   (v) श्रु

4. (क) (क) दृष्टुम् (ख) पठितुम्
   (ग) हन्तुम् (घ) खेलितुम्
   (ङ) दोग्धुम्

   (ख) (i) दुष्टम् (ii) पठितुम्
   (iii) हन्तुम् (iv) खेलितुम्
   (v) दौग्धुम्

पाँचवाँ पाठ :

परोपकार करने वाला वैद्य - नीम का पेड़

(नीम का पेड़ आम के पेड़ के साथ वार्तालाप करता है।)

नीम-पेड़ – रे आमवृक्ष! आज तो आप अत्यन्त प्रसन्न हो। क्या कारण है?

आम-पेड़ – हे नीमवृक्ष! आपके मधुर स्वर को सुनकर आनन्दविभोर हुआ। तुम धन्य हो।

नीम-पेड़ – ऐसा है। कोयल के मधुर स्वर को सुनकर आनन्दविभोर हो गए हो। तुम धन्य हो। मेरी तो सभी निंदा करते हैं।

आम-पेड़ – ऐसा नहीं है। आप तो परोपकारी हो। आपके प्रत्येक अंग रोग को मारते हैं अथवा नष्ट करते हैं।

नीम-पेड़ – मेरे कडुवे पत्ते रोग को हरते हैं अथवा मेरे प्रत्येक अंग रोग का नाश करते हैं। यह सत्य है किंतु मेरे फल भी कडुवे हैं।

आम-पेड़ – तुम क्यों चिंता कर रहे हो?

नीम-पेड़ – नहीं, नहीं। मैं चिंता नहीं कर रहा हूँ। तुम ही मुझको 'परोपकारी वैद्य' कहकर प्रशंसा करते हो।

आम-पेड़ – झूठी प्रशंसा नहीं करता हूँ। वस्तुतः आप दूसरों का उपकार करते हो। परोपकारी मनुष्य पृथ्वी पर महान जीव होता है। अतः तुम महान हो। तुम्हारा जीवन दूसरों के लिए उपकार ही है।

नीम-पेड़ – सत्य कहते हो वह ही महान है जो दूसरों पर उपकार करता है। वस्तुतः हमारा जीवन परोपकार के लिए ही है।

आम-पेड़ – हाँ, जलचर, थलचर अथवा नभचरों को हम दोनों की आवश्यकता है।

नीम-पेड़ – मैं अच्छी तरह जानता हूँ। प्राणियों के लिए हम दोनों की आवश्यकता है। यह तुम्हारा कहना अतीव ज्ञानप्रद है।

(संतुष्ट होकर नीम का पेड़ चुप हो जाता है।)

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
		कोकिला:
	कोकिले	
	कोकिलाभ्याम्	
कोकिलायै		

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	प्रशंसे	
प्रशंसाम्		
		प्रशंसाभि:
	प्रशंसाभ्याम्	

2. (क) आम्रवृक्षेण सह (ख) निम्बवृक्ष:
   (ग) कट्वानि (घ) निम्बवृक्ष:
   (ङ) आम्रनिम्ब वृक्षयो:

3. (क) आम्रवृक्षस्य प्रसन्नताया: कारणं कोकिलाया मधुर स्वरम् अस्ति।
   (ख) निम्बवृक्षाणि कटुपत्राणि व्याधिं हन्ति।
   (ग) परोपकारी जन: धरायां महान् जीव: भवति।
   (घ) निम्ब–आम्र वृक्षयो: जीवनं परोपकाराय एव भवति।

4. (क) सही (ख) सही
   (ग) सही (ग) गलत
   (ङ) गलत

5. (क) कोकिलाया: ; आनंदविभोर: ; धन्य: ; निन्दन्ति ; व्याधिं
   (ख) जानामि ; उभयो ; अस्ति ; कथनम्

6. *(i)* कोकिलस्य *(ii)* कटुम्
   (iii) हताश: *(iv)* निन्दाम्
   (v) सत्यम्

7. *(i)* कूर्दित्वा *(ii)* क्त्वा

(*iii*) क्त्वा (*iv*) कृ

(*v*) क्रीडयित्वा

छठा पाठ :
विद्यालय

संकेत : नगरात् बहिः ---------------------- छात्राः गृहणन्ति।

अर्थ—नगर से बाहर सुरम्य एकांत स्थल में विद्यालय के भवन दर्शकों के चित्त को हरते हैं। विद्यालय देश का सर्वस्व है। यहाँ पुस्तकों का ही पठन-पाठन नहीं होता, अपितु सदाचार का पाठ छात्रों द्वारा पढ़ा जाता है। विनम्रता और अनुशासनता का प्राथमिक शिक्षण यहीं होता है। समाज सेवा और देशभक्ति की शिक्षा छात्र यहीं ग्रहण करते हैं।

संकेत : महाविद्यालये अध्यापकानां ----------- भद्रवेशाश्च भवन्ति।

अर्थ—महाविद्यालय में अध्यापकों की संख्या साठ और छात्रों की हजार से अधिक होती है। महाविद्यालय में अध्यापक विविध शास्त्रों में पारंगत और शिक्षण-कला में निपुण होते हैं। महाविद्यालय में दूसरे प्रान्त के भी छात्र पढ़ने के लिए आते हैं। खेलने में, दौड़ने में, तैरने में, अनुशासन में, संयम में, समाज सेवा में, देश सेवा में, प्रतियोगिता परीक्षाओं में और भाषण प्रतियोगिताओं में जो छात्र प्रथम स्थान प्राप्त करते हैं वे वार्षिकोत्सव के अवसर पर पुरस्कृत होते हैं। विद्यालय के अनुशासनपालक छात्र हृष्ट-पुष्ट शरीर वाले, विकसित शरीर वाले और शालीन वेश वाले होते हैं।

संकेत : महाविद्यालयस्य एक देशे ----------- यात्रायां प्रशस्तयति।

अर्थ—महाविद्यालय की एक देश में, प्रदेश में, गाँव-गाँव में नगरों-नगरों में, कस्बों में, कालोनियों में एक पाठशाला 'बेसिक स्कूल' नामक अथवा शिशु सदन शिक्षाधिकारियों की संख्या स्थापित हैं। ग्राम पाठशाला के लाभ का प्रचुर मात्रा में प्रचार होता है। यहाँ बच्चों द्वारा प्रारंभिकी शिक्षा निःशुल्क प्राप्त की जाती है। जो व्यवसायी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं उनकी भी साक्षरता यहीं होती है। शिशु के गुण-अवगुणों को जानकर अध्यापक उसके गुणों में समृद्धि के लिए और दोषों के निवारण के लिए प्रयत्न करते हैं। यह पाठशाला सरल जीवन निर्वाह और मितव्ययशीलता से शिक्षित करके भावी जीवन की यात्रा को प्रशस्त करती है।

संकेत : आसु ग्राम्यपाठशालासु --------------- भारतवर्षस्येति।

अर्थ–इन गाँव की पाठशालाओं में पढ़ना–लिखना और प्रारंभिक गणित की शिक्षक द्वारा शिक्षा दी जाती है। वास्तव में ग्रामीण पाठशालाओं के ह्रास का समय उपस्थित है। नवीनयुग में नीति–रीति का अनुसरण करके चलने वाली बेसिक पाठशालाएँ सर्वत्र स्थापित हैं। प्राचीन पाठशालाएँ होते हुए भी वहाँ की स्थिति शोचनीय है। उनके इन दोषों को दूर करके प्रत्येक गाँव और प्रत्येक मौहल्ले में उनको स्थापित किया जाए। भारतवर्ष में यह महान उपकार कहाँ होता है।

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	शिक्षाभ्याम्	शिक्षाभ्यः
	शिक्षयोः	शिक्षानाम्
	शिक्षयोः	शिक्षासु
	हे शिक्षे!	हे शिक्षाः।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
छात्रायाः		छात्राभ्याम्
छात्रायाः		छात्रयोः
छात्रायाम्		छात्रयोः
हे छात्रे!		हे छात्रे!

2. (क) विद्यालयः (ख) षष्टि
   (ग) अनुशासनपालकाः (घ) ग्राम्यपाठशालानां
   (ङ) छात्र स्वयं लिखें।

3. (क) विद्यालयः देशस्य सर्वस्वम् अस्ति। अत्र केवलं पुस्तकानां पठनपाठनं भवति अपितु सदाचारस्य पाठः छात्राः पठ्यन्ते।
   (ख) देशसेवायै समाजसेवायै स्वजीविकायै छात्राः शिक्षां गृह्णन्ति ज्ञानवृद्धिश्च।
   (ग) ये छात्राः प्रतियोगितासु प्रथमं स्थानं लभन्ते, ते वार्षिकोत्सवे पुरस्कृताः भवन्ति।
   (घ) ग्राम्यपाठशालायां शिशुभिः प्रारम्भिकी शिक्षा निःशुल्कं लभन्ते।
   (ङ) प्राचीन ग्राम्यपाठशालायाः स्थितिः शोचनीयाः विचारणीयाः अस्ति।

4. (क) सही (ख) गलत

(ग) सही (घ) गलत

5. (क) शिशुभिः ; तस्य ; गुणावगुणौ ; गुणानां

6. (क)

	लकार	पुरुष	वचन
(i)	लट्लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन
(ii)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	बहुवचन
(iii)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	बहुवचन
(iv)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	द्विवचन

(ख)

	मूल शब्द	विभक्ति	वचन
(i)	व्यवसाध्य	द्वितीया	एकवचन
	पाठशाला	प्रथमा	बहुवचन
	अध्यापक	तृतीया	एकवचन
	अनुशासन	षष्ठी	एकवचन
	नगर	पंचमी	एकवचन

सातवाँ पाठ :

चिड़िया और कौए की कहानी

संकेत : शामली वृक्षे ---------------------------- वत्स्यामः।

अर्थ–शामली के पेड़ पर चिड़िया ने एक घोंसले का निर्माण किया। यह घोंसला अत्यंत सुंदर था। एक दिन सभी चिड़ियाँ दाने के लिए इधर–उधर गई थीं। उसी समय कुछ कौए वहाँ आए और बलपूर्वक घोंसले को कब्जा लिया। वे सभी कहने लगे–''अरी चिडियाओ! यह हमारा घर है। इसे तो हमने बनाया है। अतः यहाँ हम रहेंगे।''

संकेत : चटका अकथयन् -------------------- स्वामी भविष्यति।

अर्थ–चिडियाँ बोलीं–''तुम सब झूठ बोलते हो। यह घोंसला हमारा ही है।'' इससे उन दोनों के बीच झगड़ा हो गया। वे विवाद के निर्णय के लिए पक्षियों के राजा गरुड के पास गए। गरुड ने दोनों का विवाद भलीपूर्वक सुना। गरुड़ बहुत विचार करके बोला–''आप सब पुनः अपने–अपने घोंसले का निर्माण करें। जिसका घोंसला वैसा ही

होगा वही इस घोंसले का वास्तविक स्वामी होगा।''

संकेत : इति श्रुत्वा -------------------------------- स्वीकुर्म।

अर्थ–यह सुनकर कौए किंकर्त्तव्यमूढ हो गए। वे वैसे घोंसले को बनाने में असमर्थ थे। वे बोले–''यह निर्णय हम स्वीकार नहीं करते हैं।''

संकेतः गरुडः अजानयत ---------------------------- उत्पतन्।

अर्थ–गरुड जान गया–सभी कौए झूठ बोल रहे हैं। उनका मनोरथ व्यर्थ है। अतः उसने निर्णय किया–चिडिया ही वास्तविक स्वामी है। कौए मलिन मुखी होकर (लज्जित होकर) दूसरी जगह उड़ गए।

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	गरुडौ	गरुडाः
	गरुडौ	गरुडा
	गरुडाभ्याम्	गरुडैः
	गरुडाभ्याम्	गरुडेभ्यः

2. (क) अन्नेभ्यः (ख) अति सुंदरम्
   (ग) गरुडः (घ) कौरवाः
   (ङ) चटका

3. (क) चटका शामली वृक्षे नीडनिर्माणम् अकरोत्।
   (ख) कौरवाः अकथयन् – रे चटकाः! इदमस्माकं गृहम्।
   (ग) गरुड़ः बहुविचारं कृत्वा अवदत्–''भवन्त, पुनः स्व-स्व नीडनिर्माणं कुरुथ।
   (घ) सः अनिर्णयत् – चटका एव वास्तविक स्वामी अस्ति।

4. (क) गलत (ख) सही
   (ग) गलत (घ) सही
   (ङ) गलत

5. (क) सः सत्यं वदति। (ख) अहम् तत्र वत्स्यामि।
   (ग) कौरवः मिथ्या वदति। (घ) कौरवः म्लानमुखी अवदत्।
   (ङ) चटका नीडनिर्माणं करोति।

आठवाँ पाठ :

कोयल की आवाज

संकेत : नितिनः अमितः ------------------परिणामेन भविष्यति।

अर्थ–नितिन और अमित दो मित्र थे। दोनों एक दिन अपने बगीचे में फल तोड़ने को गए। अचानक दोनों को कोयल की आवाज सुनाई दी। दोनों में नितिन अंधविश्वासी था। वह बोला–"मित्र! मैं यह कोयल की आवाज सुबह ही सुबह सुन रहा हूँ। अतः मुझे यह विश्वास पैदा हो रहा है कि यह दिन (मेरे लिए) सौभाग्यशाली होगा। अवश्य ही आज धन की थैली प्राप्त करूँगा। यहाँ यह सब कुछ इसी कोयल की आवाज के परिणाम (वजह) से होगा।"

संकेतः सां वार्तां श्रुत्वा ---------------------- अहं प्राप्स्यामि।

अर्थ–उसकी बात को सुनकर अमित ने प्रतिवाद किया। वह भी अंध–विश्वासी था। वह प्रतिवाद करते हुए बोला–"नहीं, मित्र! मेरे समान तुम भाग्यशाली नहीं हो। यहाँ मुझे यह पूरा विश्वास है कि उस थैली को मैं प्राप्त करूँगा।

संकेतः अनेन तयो मध्ये ----------------------- अगच्छताम्।

अर्थ–इससे दोनों के बीच कलह हो गया। धीरे–धीरे दोनों के बीच बड़ा झगड़ा उत्पन्न हो गया। इस झगड़े से दोनों खून से लथपथ हो गए। अपने–अपने कष्ट को दूर करने के लिए वे वैद्य के पास गए।

संकेत : वैद्यः तौ ----------------------------- अभवताम्।

अर्थ–वैद्य ने दोनों की चिकित्सा की। (और) वह पूछने लगा–"अरे बालको! तुम दोनों कैसे खून से लथपथ हो गए।" तब दोनों ने पहले हुई घटना को बताया। जिसे सुनकर वैद्य हँसा और बोला–"अरे बालको! तुम क्या कह रहे हो? वह कोयल की आवाज सौभाग्य का सूचक है?" अमित और नितिन ने (शर्म से) सिर झुका लिया।

संकेत : वैद्यः पुनः पुनः ----------------------- आगमिष्यति।

अर्थ–वैद्य बार–बार हँसते हुए बोला–"यह कोयल की आवाज तो मेरे लिए सौभाग्य की सूचना देने वाली हुई। अब तुम दोनों यदि इसी प्रकार लड़ाई करोगे तो तुम दोनों आने वाले समय में अँधेरे में होगे किंतु मुझे धन की थैली मिलती रहेगी।"

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अमित:		अमिता:
अमितम्		अमितान्
अमितेन		अमितै:
अमिताय		अमितेभ्य:

2. (क) फलानि त्रोटनाय (ख) प्रतिवादम्

   (ग) कलहम् (घ) वैद्यसमीपम्

3. अमित: ; अंधविश्वासी ; अकथयत् ; भाग्यशाली ; मह्यम् ; स्यूतम्

4. (क)

मित्रम्	सखा
ब्रह्मकाले	ब्रह्ममुहुर्ते
दिवस:	दिवा
एकदा	एकस्मिन्नवसरे

   (ख)

विश्वासम्	अविश्वासम्
आसीत्	अस्ति
अत्र	तत्र
अभवत्	भविष्यति
अपृच्छत्	उत्तरत्

5. (क) अहं (ख) मत्

   (ग) माम्

नौवाँ पाठ :

अन्योक्ति विलास

संकेत : रे रे चातक! -------------------------- दीनं वच:॥१॥

अर्थ–अरे पपीहे! मित्र, कुछ क्षण के लिए मेरी बात को सावधानीपूर्वक सुनो। इस आकाश में अनेक बादल होते हैं किंतु सभी एक जैसे (स्वभाव वाले) नहीं होते। इनमें से कुछ वर्षा करके पृथ्वी को गीला करते हैं कुछ वृथा ही गरजते हैं। तुम जिस–जिस को देखो उसके आगे दीन वचन मत बोलो॥1॥

संकेत : न वै ताडनात् ---------------------- तोलयन्ति॥२॥

अर्थ–न तो मुझे पीटने पर दुख होता है, न आग में तपाने से दुख होता है, न मुझे किसी को बेच देने पर दुख होता। सोना कहता है, मुझे तो तब दुख होता है जब लोग मुझे गुंजा के साथ तोलते हैं।।2।।

संकेत : भो राजहंस! ------------------------ मूढलोकाः ॥३॥

अर्थ–हे राजहंस! तुम इधर (इस संसार के तालाब में) क्यों आ गए हो? ये जो बगुले हैं ये ही हंस की प्रतीति करा रहे हैं। तुम शीघ्रता से अपने स्थान को वापस चले जाओ। कहीं ऐसा न हो यह मूर्ख संसार तुम्हें ही बगुला कहने लगे।।3।।

संकेत : रात्रिर्गमिष्यति ----------------------- उज्जहार॥४॥

अर्थ–रात जाएगी, सुंदर सुबह होगी, सूर्य निकलेगा, कमल खिलेगा।' इस प्रकार कमल कोश में (कमल के अंदर) बैठा भौंरा सोच ही रहा था कि महान दुःख है कि उस नलिनी (कमल) को हाथी ने उखाड़ दिया।

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	राजहंसाभ्याम्	राजहंसेभ्यः
राजहंसस्य		राजहंसानाम्
राजहंसे	राजहंसयोः	
भो राजहंस!		

2. (क) मेघजलं (ख) गुंजया सह तौलम्
   (ग) बकानां मध्ये (घ) नलिनीम्
   (ङ) मृणालम्
3. (क) सावधान मनसा (ख) मे ; तदेकं
   (ग) योऽसौ ; इह ; इति (घ) रात्रिर्गमिष्यति
   (ङ) मृणालपटली
4. (क) वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा
   (ख) सरोवरस्य
   (ग) पुनः स्वभूमौ।
   (घ) कोषगते द्विरेफे

(ङ) तापनाद् वह्निमध्ये।

5. (क) चातकः — पपीहः

मित्र — सखा

सुवर्णस्य — कनकस्य

गजः — हस्तिः

दसवाँ पाठ :

हिमालय

संकेत : भारतवर्षस्योत्तरस्यां ---------------------- कुर्वन्ति।

अर्थ–भारतवर्ष के उत्तर दिशा में उच्चतम पर्वत हिमालय है। इसकी चोटी का क्षेत्र हमेशा बर्फ से ढका रहता है। इस कारण से इसे 'बर्फ का घर' अर्थात् हिमालय कहते हैं। यह सभी पर्वतों में उच्चतम है इसलिए नगाधिराज भी कहते हैं। प्रजापति ने यज्ञांग योनित्व देखकर कल्पित यज्ञ भाग को उस हिमालय को स्वयं प्रदान किया था। हिमालय के इधर-उधर बिखरे/फैले हुए लंगूरों की शोभा चंद्रमा की किरणों से चमकती हुई रोमावलि गिरिराज शब्द को अर्थ युक्त करती है।

संकेत : अनन्तरत्नप्रभवस्य ---------------------मार्गं विदन्ति।

अर्थ –अनन्त रत्नों को उत्पन्न करने वाले हिमालय की शोभा बर्फ के सौभाग्य/कारण से नष्ट नहीं होती है। क्योंकि एक दोष गुणों के मध्य धुल जाता है (अवगुण नहीं रहता) जैसे चंद्रमा किरणों से अंगों को धो देता है।

संकेत : अस्य हिमालयस्य --------------------- मार्गं विन्दति।

अर्थ–इस हिमालय की घाटी में घूमते हुए बादलों की छाया के नीचे वर्षा के द्वारा चिंता किए हुए ऋषि आश्रय पाते हैं। वहाँ पर स्थित वनैले हाथियों का समूह खुजली को मिटाने के लिए वृक्षों पर गाल को रगड़ते हैं तब पेड़ों से निकलने वाले गोंद की गंध से हिमालय की चोटियाँ सुरभित हो जाती हैं। हिमालय की गुहाओं में प्रकाश से डरा हुआ अंधकार सूर्य को नहीं देखता है। जिसमें (सूर्य को) देखकर घायल हुए शेरो के रक्त बिंदुओं से बने पंजों की कान्ति को देखकर वन मानव (आदिवासी) रास्ते खोजते हैं।

संकेत : अयं पर्वतः ---------------------------- मानदण्डः।

अर्थ–यह पर्वत भारतवर्ष का मुकुट है। इसे भारत का प्रहरी भी कहा जाता है

क्योंकि इसकी बादलों को छूती हुई ऊँची शिखरें इन्हें लाँघना दुर्लभ है। सभी शिखरों में एवरेस्ट शिखर ऊँची है। हिमालय भारतवर्ष का परोपकार करने वाला है। यह गंगा, सिन्धु ब्रह्मपुत्र और दूसरी बहुत–सी नदियों का उद्‌गम स्थान है। संसार से विमुखों (लोगों का) का इसकी गुफायें आश्रय स्थान है। हिमालय में बहुत से रत्न है। इसमें अनेक औषधियाँ भी संभव है। यह पर्वत भारत का उत्तर प्रदेश में वर्षा का कारण है। यहीं पर्वत हमारे देश की रक्षा करता है क्योंकि यहाँ से आक्रमण करना कठिन है। नैनीताल, मसूरी, अल्मोडा, शिमला आदि नगर इसकी तलहटी में स्थित हैं। गर्मी की ऋतु में, धनिक लोग स्वास्थ्य लाभ के लिए वहाँ जाते हैं और आनंद के लिए इधर–उधर घूमते हैं। महाकवि कालिदास कुमारसमभव के आदि सर्ग में लिखा है–

उत्तर दिशा में देवताओं की आत्मा पर्वतों का राजा हिमालय नाम वाला है। यह पूरब से पश्चिम को पैमाने से नापते हुए के समान समुद्र द्वारा धोया जा रहा है।

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	वृष्टी	वृष्टयः
	वृष्टी	वृष्टीः
	वृष्टिभ्याम्	वृष्टिभिः
	वृष्टिभ्याम्	वृष्टिभ्यः

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सुरभिः		सुरभयः
सुरभिम्		सुरभीन्
सुरभ्या		सुरिभिः
सुरभ्यै/सुरभ्ये		सुरिभ्यः

2. (क) भारतवर्षस्योत्तरस्यां दिशि (ख) हिमालयपर्वतः
   (ग) हिमालयः। (घ) हिमालय पर्वतः
   (ङ) हिम + आलय
3. (क) अस्य शिखरं प्रदेशाः सदा हिमेनाच्छादिताः।
   (ख) हिमालयस्य लांगूल विक्षेपविसर्पिशोभैः चन्द्रमरीचिगौरेः बालव्यजनैः चमर्यः गिरिराजशब्दमर्थयक्तं कुर्वन्ति।

(ग) वन्यकरिणः कपोलकण्डूः विनेतुं सरल वृक्षेषु कपोल स्थलानि घर्षन्ति, तदा वृक्षेभ्यः क्षरितेन खीरेण संजातः गन्धः हिमाद्रेः सानूनि सुरभीकरोति।

(घ) हिमालयात् गंगायाः, सिन्धो, ब्रहमपुत्रस्य नद्याः वहन्ति।

(ङ) महाकविकालिदासेन कुमारसम्भवस्य आद्ये सर्गे लिखितम्–
''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापशै तोयनिधि वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।

3. (क) गलत (ख) सही
(ग) गलत (घ) सही

4. घनानां ; वृष्टिभिः ; वृक्षेषु ; वर्षन्ति ; क्षरितेन ।

5. (क)

	लकार	पुरुष	वचन
(i)	लङ् लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन
(ii)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	बहुवचन
(iii)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	द्विवचन
(iv)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन

(ख)

	मूलशब्द	विभक्ति	वचन
(i)	उत्तर	सप्तमी	एकवचन
(ii)	वर्षा	षष्ठी/सप्तमी	एकवचन
(iii)	बहुन्	षष्ठी	बहुवचन
(iv)	शोभा	तृतीया	बहुवचन
(v)	केशरि	षष्ठी	बहुवचन

ग्यारहवाँ पाठ :

कवि और उनकी कविता

संकेत : दर्पं ---------------------------------- यन्निकृन्तति।

अर्थ–साँप रूपी कवियों का मैं मायूरी देखने और सुनने का अहंकार बन्द कर सकती हूँ, अपनी मायूरी विद्या से।

संकेत : नीलोत्पलदलश्यामां ------------------ सरस्वती।

अर्थ–नील कमल की श्याम किरणों वाली सरस्वती को दण्डी सर्वशुक्ला कहते हैं। मैं बिज्जिका जानती हूँ। ये बेकार कह रहे हैं।

संकेत : भारवि ------------------------------- बहुज्ञता:।

अर्थ–भारवि राजनीतिज्ञ हैं, कालिदास महाकवि है, भटिट व्याकरण के ज्ञाता हैं और माघ सर्वगुण सम्पन्न हैं।

संकेत : माघेन ------------------------------------- यथा

अर्थ–माघ के द्वारा नीति का निर्माण किया गया है जिनका परिक्रम सुनिश्चित है भारवि आदि कवि वानरों की तरह स्मरण मात्र हैं।

संकेत : बभूव ------------------------------- भर्तृमेष्ठ ताम्।

अर्थ–पहले पृथ्वी पर बाल्मीकि कवि हुए बाद में पृथ्वी पर भर्तृहरि ने प्रतिष्ठा प्राप्त की। भवभूति ने पुन: इस रेखा को बढ़ाया इन सबको राजेशखर ने प्राप्त किया। अर्थात् ये सभी गुण राजशेखर में हुए।

संकेत : धनवन्तरि ---------------------------- विक्रमस्य।

अर्थ–धनवन्तरि, क्षपण, कामार, सिंह, शंकु, वेताल भट्ट, घटखारि, कालिदास वराहमिहिर ये नवरत्न विक्रमादित्य के दरबार की शोभा थे।

संकेत : यश्याश्च ---------------------------- कौतुकाय।

अर्थ–जिस कविता रूपी कामिनी (स्त्री) कर्णफूल केयूर और हास माघ है कविकुल गुरु कालिदास जिसका विलास करते हैं। पञ्चवाण रूपी बाणभट्ट जिसे हर्षित करते हैं। ऐसी कविता किसे प्रिय नहीं होती?

अभ्यास

1. (क) मायूरी मायूरीं प्रयुज्य कवीनां दर्पं निकृन्तति।
   (ख) विज्जिका संस्कृत–विदुषी आसीत्। सा उद्घोषयति–'सर्वशुक्ला सरस्वती' इति दण्डिना वृथा प्रोक्ता।
   (ग) भारवि राजनीतिज्ञ: आसीत्।
   (घ) बाल्मीकि, भवभूति, भर्तृहरि राजशेखर:।
   (ङ) मायूरी, विज्जिका, दण्डी, भारवि, कालिदास:, भट्टि:, माघ:, बाल्मीक:, भर्तृहरि:, भवभूति:, राजशेखर:, धनवन्तरि:, क्षपण:, कामरसिंह:, शंकु, वेताल, बाणभट्ट, घटखारि, वारहमिहिर: च।
2. (क) विज्जिका (ख) माघे
   (ग) भारवेरेव (घ) भवभूति

(ङ) पंचबाणस्तु

3. भुजंगानाम् — सर्पाणाम्
सन्ति — विद्यन्ते
सरस्वती — शारदा
वर्तते — अस्ति
कथय — वद

4. (क) मायूरी यन्निकृन्तति। (ख) कालिदासो महाकवि।
(ग) भव कविपुरा (घ) नृपते सभायां
(ङ) कालिदासो विलासः (च) कविता कामिनी कौतुकाय

5. (क) (ii) षष्ठी (ख)(ii) राज्य की नीति बनाने वाला
(ग) (ii) कालिदास (घ) (i) बाणभट्ट
(ङ) (ii) कविरत्न

6. (क) बाल्मीकिः रामस्य चरितम् अलिखत्।
(ख) कविः कालिदासः श्रेष्ठः अस्ति।
(ग) अहं विज्जिका ससंकल्पेन वदामि।
(घ) मयूरीमायूरी विद्यां प्रयुज्यते।
(ङ) कविता कवीनां श्रृंगारः अस्ति।

7. (क) विष + अविद्येव
(ख) यत् + निकृन्तति
(ग) नीला + उत्पल
(घ) माम् + अजानता
(ङ) कालिदासः + विलासः
(च) न + ऐषा

बारहवाँ पाठ :

छोटी घंटी

संकेत : रामदासः एकः --------------------- मूल्यवती आसीत्।

अर्थ–रामदास एक ग्वाले का पुत्र था। वह रोजाना गाय चराने के लिए जंगल में

जाता था। उसकी प्रत्येक गाय के गले में एक-एक घंटी बँधी हुई थी। उन गायों में जो गाय अति मनोहारी और रूपवती थी उसके गले में घंटी बहुमूल्य थी।

संकेत : एकदा रामदासः विपिने ----------- कति मूल्यः अस्ति?

अर्थ–एक दिन रामदास जंगल में रोजाना की तरह गाय चराने के लिए गया हुआ था। तभी कोई अजनबी मनुष्य जंगल के रास्ते से आया और बोला–'यह घंटी अत्यंत शोभनीय है। इसका क्या मूल्य है?''

संकेत : ''केवलं विंशति ------------------- मानवः अवदत्।

अर्थ–''केवल बीस रुपये।'' रामदास ने उत्तर दिया। ''केवल बीस रुपये'! आश्चर्य है! मैं तुम्हें चालीस रुपये देता हूँ। यह घंटी मुझे दे दो।' अजनबी आदमी ने कहा।

संकेत : तं वचनं श्रुत्वा --------------- रूप्यकाणि मे देहि।''

अर्थ–उस वचन को सुनकर रामदास प्रसन्न हुआ। शीघ्रता से ही घंटी लेकर रामदास अजनबी के पास गया और बोला–अरे राहगीर! इस घंटी को पकड़ो। (और) चालीस रुपये मुझे दो।''

संकेत : घंटिकां दत्त्वा ---------------------- कुत्र चरति।

अर्थ–घंटी देकर रुपये लेकर वह घर चला गया। अब घंटी के बिना गाय की गर्दन खाली हो गई। घंटी के अभाव में रामदास के सामने समस्या आ गई। वह जानने में असमर्थ हो गया कि इस समय वह गाय किधर चर रही है।

संकेत : एकदा सा धेनुः ------------------- स्वविवेकं त्यजति।

अर्थ–एक दिन वह गाय दूर चली गई। अवसर मिलने पर उस अजनबी आदमी ने गाय का हरण कर लिया। गाय चुरा लेने को सुनकर रामदास रोने लगा। उसने समस्त घटना अपने पिता से कही। उसने कहा–''पिताजी! मुझे कुछ भी अनुमान नहीं था, वह अजनबी मनुष्य मेरी घंटी का अधिक मूल्य देकर ऐसा कार्य करेगा।''

पिता ने कहा–''लोभ पाप का कारण है। लोभ से (में) मनुष्य अपना विवेक त्याग देता है।

अभ्यास

1. (क) गोपालकस्य — (ख) गोचारणाय
   (ग) विपिनमार्गात् — (घ) विशंति रूप्यकाणि

(ङ) लोभः

2. (क) धेनूनां कण्ठे एकैका क्षुद्रा घण्टिका विराजते स्म।

(ख) यः धेनु अति मनोहरा, रूपवती आसीत् तस्य कण्ठे घंटिका अति मूल्यवती आसीत्।

(ग) इयं घंटिका अति श्लाघनीया अस्ति। अस्या कति मूल्यः अस्ति।

(घ) अज्ञात मानवः घंटिकायाः चत्वारिंशतरूप्यकाणि दातुम् उत्सृजयेत्।

(ङ) रामदासः अवदत्–"भो पथिक! ग्रहाण इमां घंटिकाम्। चत्वारिंशतानि रूप्यकाणि मे देहि।"

(च) सः ज्ञातुम् असमर्थः अभवत् यत् निवर्तमाने सा धेनुः कुत्र चरति।

(छ) धेनवे अपहरणं श्रुत्वा रामदासः अरोदीत्।

3. (क) कुत्र (ख) केषाम्

(ग) का (घ) कस्मै

(ङ) कस्य

4. (क)

गोपालकस्य	धेनुरक्षकस्य
पुत्रः	सुतः
कण्ठे	ग्रीवायाम्
क्षुद्रा	लघु
वीक्ष्य	दृष्ट्वा

(ख)

रूपवती	कुरूपा
उत्तरम्	प्रश्नम्
अगच्छत्	आगच्छत्
नीत्वा	त्यक्त्वा
ददामि	नयामि

5. (क) दृष्ट्वा (ख) दृष्ट्वा

(ग) नीत्वा (घ) दत्त्वा ; गृहीत्वा

(ङ) ज्ञातुम्

7. तेषु ; भाषायां ; भारतस्य ; अस्ति

8. (क) एकवचन द्विवचन बहुवचन

गच्छत्　　　　　　　　　　　　　　　　　　गच्छन्

गच्छतम्

गच्छम्　　　　　　　गच्छाव

(ख) (1) गच्छन्　　　　　(2) गच्छतम्

(3) गच्छाव　　　　　(4) गच्छत

(5) गच्छत्　　　　　(6) गच्छ

तेरहवाँ पाठ :

जरासंध का वध

संकेत : महाभारते जरासंधः -------------------- भीमेन अभवत्।

अर्थ–महाभारत (के युद्ध) में जरासंध नाम का कौरव पक्ष का सिपाही था। वह युद्ध कौशल में निपुण था। मल्लयुद्ध (कुश्ती) के समय जरासंध की मृत्यु भीम के द्वारा हुई।

संकेत : बालकः जरासंधः -------------------- चिंतितः अभवत्।

अर्थ–बालक जरासंध राजा वृहद्रथ का पुत्र था। राजा वृहद्रथ के समय बीत जाने पर जब कोई संतान नहीं हुई। तब वे चिंतित हुए।

संकेत : एकदा एकः सिद्धपुरुषः -------------------- अददात्।

अर्थ–एक दिन एक सिद्ध पुरुष उनके महल में उपस्थित हुए। तब राजा वृहद्रथ के लिए सिद्ध पुरुष द्वारा एक उपाय किया गया। उस सिद्ध पुरुष ने राजा वृहद्रथ के लिए एक आम फल दिया।

संकेत : तस्य सिद्धपुरुषस्य ---------------------- अददात्।

अर्थ–उस सिद्ध पुरुष का अतिथि–सत्कार करने के बाद और उनके जाने के बाद उस राजा ने उस फल को लेकर दो भागों में बाँटकर आधा–आधा करके अपनी दोनों पत्नियों को खाने को दिया।

संकेत : अथ विभाजनेन ---------------------- संज्ञा अभवत्।

अर्थ–इस प्रकार फल के विभाजन करने से समय के बाद दो आधे–आधे शरीर रूप में दोनों (स्त्रियों) ने एक पुत्र को जन्म दिया। अपने पुत्र के इस रूप को देखकर दोनों माताएँ भयभीत हो गईं। उन दोनों मांस के पिण्डों को जरा नाम की किसी शल्यचिकित्सा में निपुण राक्षसी ने वहाँ आकर एक कर दिया। इसी कारण से उनके पुत्र का नाम

'जरासंध' पड़ा।

संकेत : महाभारतकाले --------------------- वीरगतिं प्राप्तवान्।

अर्थ—महाभारत के समय में जब कौरव-पाण्डवों के बीच युद्ध हुआ तब यह वीर कौरव पक्ष में अथवा दुर्योधन के पक्ष में युद्ध में निरत हुआ। जरासंध का भीम के साथ मल्लयुद्ध हुआ। उस युद्ध में भीम को हतोत्साहित देखकर श्रीकृष्ण ने कूटनीति के अनुसार भीम को संकेत किया। संकेत रूप में कृष्ण ने एक तिनके को लेकर बीच से दो भाग बाँट दिया। संकेत मात्र से भीम ने भी जरासंध के पैर के ऊपर पैर रखकर और दूसरे को हाथों से पकड़कर शरीर के दो भाग कर दिए। शरीर के अलग-अलग होने से जरासंध वीरगति को प्राप्त हुआ।

अभ्यास

1. (क) कौरवपक्षस्य (ख) जरासंधः
   (ग) सिद्धपुरुषः (घ) जरानामाख्या
   (ङ) वपु

2. (क) वृहद्रथस्य चिंताया कारणं तस्य संतानोपत्ति आसीत्।
   (ख) फलमादाय वृहद्रथः द्वौ भागौ विभज्य पत्नीभ्याम् अददात्।
   (ग) जरासंध जन्मावसरे द्वौ अर्द्धार्द्धवपुरुषे आसीत्।
   (घ) महाभारते कौरव-पाण्डवयोर्मध्ये युद्धः अभवत्।
   (ङ) जरासंधेन सह भीमस्य युद्धम् अभवत्।
   (च) तृण संकेत क्रियां कृत्वा कृष्णः जरासंधं मारयितुं भीमाय निर्देशयत्।

3. (क) कस्य (ख) कुत्र
   (ग) कः (घ) कम्
   (ङ) किम्

4. (क) कौरवपक्षे — दुर्योधनपक्षे
   निपुणः — चतुरः
   संतति — प्रजा
   भार्या — पत्नी
   नृपः — नरेश
   (ख) कौरवाः — पाण्डवाः

विभज्य	संयुज्य	
स्वपादम्	परहस्तम्	
कूटनीतिः	सम्यक्नीतिः	
युद्धम्	संधिः	

5. (क) क्रीडेत् (ख) आगच्छेत्
(ग) वसेत् (घ) कुर्यात्
(ङ) पठ

6.

	मूल पद	विभक्ति	वचन
(क)	भीम	षष्ठी	एकवचन
(ख)	जरासंध	तृतीया	एकवचन
(ग)	संकेत	सप्तमी	एकवचन
(घ)	युद्ध	द्वितीया	एकवचन
(ङ)	वृहद्रथ	चतुर्थी	एकवचन

	मूल पद	पुरुष	वचन	लकार
(क)	दा	प्रथम	एकवचन	लङ् लकार
(ख)	जन्	प्रथम	बहुवचन	लङ् लकार
(ग)	दृश	प्रथम	एकवचन	लट् लकार
(घ)	स्था	प्रथम	बहुवचन	लङ् लकार

7. (क) वृहत् + रथः (ख) काल + अन्तरे
(ग) अर्द्ध + अर्द्धः (घ) एक + आकारम्
(ङ) सत्कार + उपरान्ते (च) हत् + उत्साहितम्

चौदहवाँ पाठ :

जवाहर लाल महोदय

संकेत : जवाहरलाल नेहरू ------------------ स्वरूपरानी आसीत्।

अर्थ–जवाहर लाल नेहरू महोदय का जन्म 14 नवम्बर 1889 ई० में काश्मीरी सारस्वत ब्राह्मण कुल में प्रयाग (इलाहबाद) के मीरगंज नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता पंडित मोतीलाल नेहरू और माता स्वरूपरानी थी।

संकेत : आजन्मनः अस्य ------------------------ पर्यपालयत्।

अर्थ–जन्म से पहले इनके पूर्वज दिल्ली नगर में नेहर नदी के किनारे रहते थे। इसी कारण यह 'नेहरू' इस उपनाम से प्रसिद्ध हुए। उस समय पण्डित मोती लाल प्रयाग के सभी वकीलों में प्रसिद्ध थे। वह (वे) आनंद भवन में रहते थे। बहुत से अंग्रेज भी इनके घर आने के उत्सुक थे। अनेक बार उन्होंने एक ही मुकदमें में लाखों रुपए अर्जित किये थे। पण्डित जवाहर लाल नेहरू अपने पिता की इकलौती संतान थे। जिससे उन्होंने उनको राजपुत्र के समान पाला।

संकेत : जवाहरलाल नेहरू महोदयः -------------- प्रतिज्ञाम् अकरोत्।

अर्थ–जवाहरलाल नेहरू महोदय ने पाँच वर्ष तक अपने घर में ही शिक्षा ग्रहण की। तब वे इंग्लैण्ड में 'हैरो शिक्षण संस्था' में प्रविष्ट हुए। उसके बाद 'ट्रिनिटी कैम्ब्रिज' विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करके उन्होंने बी०एस–सी०, एम०ए० उपाधि प्राप्त की। अपने अध्ययन काल में ही उन्होंने अपनी मातृभूमि को स्वाधीन करने के लिए प्रतिज्ञा की।

संकेत : प्रथमं सः -------------------------उल्लेखं न कुर्मः।

अर्थ–पहले उन्होंने अपने पिता के साथ प्रयागीय प्रधान न्यायालय में वकालत का कार्य आरंभ किया। सन् 1916 में उनका विवाह कमला नाम की कन्या के साथ हुआ। इंदिरा गाँधी उनकी पुत्री थीं। सन् 1918 ई० में उन्होंने भारतीय स्वशासन संस्था का मंत्री पद सँभाला। और वहाँ पूर्णनिष्ठा से आन्दोलन किया। सन् 1923 ई० में वे कोकोनाड़ा कांग्रेस में प्रथम वार राष्ट्रीय महासभा के प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए। सन् 1929 ई० में वे अखिल भारतीय श्रमिक संघ राष्ट्रीय महासभा के अध्यक्ष हुए। सन् 1936–37 ई० में उन्होंने सम्पूर्ण देश की यात्रा की। सन् 1938 ई० में वे चीन और स्पेन देश की यात्रा करके अपने देश लौटे। 1939 में उन्होंने गोरखपुर में चार साल कारागार सहा। 1942 में उन्हें मुम्बई नगरी में गाँधी आदि के साथ शासकों द्वारा पकड़ लिया गया। पुनः सन् 1945 ई० में वे कारागर से मुक्त हुए। इस प्रकार उनकी जीवन संबंधी बहुत सी घटनाएँ हैं जिनका/जिन सभी का उल्लेख हम नहीं कर रहे हैं।

संकेत : पंडित जवाहरलाल नेहरू ------------------ इत्यादयः।

अर्थ–पण्डित जवाहर लाल नेहरू महोदय विश्वप्रसिद्ध नेता थे। वे महान क्रांतिकारी, गम्भीर विचारक, अध्ययनशील, उद्भट लेखक, राजनीति शास्त्र के महान विशारद् और अंग्रेजी भाषा के पंडित थे। उन्होंने बहुत से ग्रंथ लिखे। जैसे–मेरी आत्मकथा, विश्व इतिहास का प्रकाश, भारत की समस्या, पिता के पत्र पुत्री के प्रति, स्खलन संसार इत्यादि।

संकेत : अयं महाभागः ------------------------ अनुकरणीयंच।

अर्थ–ये महोदय भारत के स्वाधीनता संग्राम में प्रयत्नरत रहे। हमारे देश की स्वतंत्रता में इनका महान योग है। अतः पंडित जवाहर लाल महोदय हमारे स्मरणीय आदर्श और अनुकरणीय (पुरुष) हैं।

अभ्यास

1. (क) जवाहर लाल नेहरू महोदयस्य जन्म नवम्बर मासस्य चतुर्दश दिनांके 1889 तमे खिष्टाब्दे अभवत्।
   (ख) अस्य जनकः पं० मोतीलाल नेहरू महोदय माता च स्वरूप रानी आसीत्।
   (ग) ट्रिनेट्री कैम्ब्रिज विश्वविद्यालये शिक्षां गृहीत्वा सः बी०एस–सी०, एम०ए० इति उपाधिकारी अभवत्।
   (घ) जवाहरलाल महोदयस्य विवाह कमला नाम्नी कन्यया सह अभवत्।
   (ङ) सः महान क्रांतिकारी, गम्भीर विचारकः, अध्ययनशीलः, उद्भट लेखक, राजनीति शास्त्रस्य महत् विशारदः आंग्लाभाषायांच पण्डितः आसीत्।
2. (क) नेहरतटे (ख) स्वगृहे
   (ग) स्वाध्यायकाले (घ) इन्दिरा गान्धि
   (ङ) 1939
3. (क) अतएव वे (वह) नेहरू इस उपनाम से विख्यात हुए।
   (ख) महोदय पंडित जवाहरलाल नेहरू अपने पिता के इकलौते पुत्र थे।
   (ग) (वह) वे अखिल भारतीय रमिक संघ के राष्ट्रीय महासभा के अध्यक्ष हुए।
   (घ) पंडित नेहरू महोदय विश्व प्रसिद्ध नेता थे।
   (ङ) हमारे देश की सवतंत्रता नेहरू महोदय का महान योग है।
4. (क) तदानीम् (ख) विश्वेतिहासस्य
   (ग) न्यायालये (घ) प्रधानामात्यः
   (ङ) एकस्मिन्नेवाभियोगे (च) उपाधिकारी
5. (क) प्रति + आगच्छत् (ख) कांग्रेस + अवसरे
   (ग) इति + आदयः (घ) स्व + अध्याय
   (ङ) विश्वविद्या + आलये (च) काल + इव